णीधॅण णफऽ: ३०६४ छंद: १६

बिराजत राधे रूप निधान
सुंदरता की पुंज प्रगट तन पटतर त्रिया न आन
सिंदुर सीस मांग मुकतावलि कच कमनीय विनान
मानु चंद मुष कोपि हन्यौ है राहु बिषम बलवान
तरल तिलक ताटंक गल्ल पर झलकनि सुंदर कान
मानौ ससि कौ सहाय कीबे कौं सजि आये द्वै भान
ज्यौं अति जोति प्रकासित दीपक रिपु नहि तजत नियान
को कबि कहत उरोजनि सौं ए दारयौ फलहि समान
सद्रिस न भये लजाए फल वे हरि हीयै बिहरान
रोम राजि त्रिबली छबि छाजति जानु कियौ यह ठान
क्रिस कटि निबिड दंड दे मानौ बिधि दीनै बंधान
अंग अंग आभूषन भ्राजत कहं लग करौं बषान
नेह विवसता भई बिकल तन मिले सूर प्रभु जान

Sūrsāgar

Bryant edition, corresponding to Nāgarīpracāriṇī Sabhā 3064